कृपाराम खिड़िया के नीतिकाव्य की प्रासंगिकता

गजेन्द्र दान

प्रस्तावना :

भारतीय लोक जीवन में आदर्शों से युक्त शिक्षा नैतिक विकास एवं आध्यात्मिक उन्नति की जननी रही है। नीतिपरक साहित्य भ्रष्टाचार के गहन अंधकार में डूबे समाज के लिए प्रकाशमान दीपक है। जब–जब मानवीय मूल्यों का संकट गहराता है तब–तब नीति साहित्य की उपयोगिता बढ़ी है। साहित्य में हमेशा से ही नीति विषयक कहानियों, कथाओ एवं काव्य का महत्व रहा है। भौतिकता के प्रबल प्रभाव और सुरा, सुन्दरी, स्वर्ण के आकर्षण में फँसे समाज को मोहगर्त से नीतिज्ञान ही उबारता है। भौतिकता एवं नीतिह्रास परिवेश में आज हम जी रहे हैं यह रीतिकाल के पतित परिवेश से भिन्न नही है। सकुंचित मानसिकता वाले शासक आज भी सत्ता पर काबिज है आज के भौतिक युग में नीतिमूल्य गिरते नजर आ रहे है, नैतिकता के अभाव में मानवता संकट में है। अतः कही न कही इन जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए प्राचीन काल से ही पल रही एक धारा जिसे साहित्य में नीतिकाव्य का नाम दिया है, वह आज भी भटके समाज को सत्पथ पर ला सकता है, अतः इसका अध्ययन अनुशीलन आज सर्वथा प्रासंगिक है।

अपने भूतकाल के अनुभवों से भविष्य के लिए पथ–प्रदर्शन करने वालों में हिन्दी साहित्य में जो नीतिकार हुए है उनमें कबीर, तुलसी, रहीम, वृंद, दीनदयाल गिरी, गिरधर आदि कवियों की पंक्तियां आज भी हमें प्रेरित करती है। इन्हीं मध्यकालीन नीतिकारों ने नीति परम्परा को समृद्ध बनाया। इनके दोहे सरल व सुबोध है प्रत्येक समाज और प्रत्येक आयुवर्ग के पाठक के लिए उपयोगी हैं। जिस तरह हमारी वर्तमान समस्याओं के सर्वाधिक व्यावहारिक समाधान रहीम के नीतिकाव्य में मिलते है उसी प्रकार राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध सोरठे जो जनता के कठाहार बने हुए है, जिनके रचयिता कृपाराम जी खिडिया का नाम आदर से लिया जाता है। अपने सेवक राजिया को सम्बोधित करके कहे गये डिंगल भाषा के ये सोरठे राजस्थान की अनमोल निधि है। सरल से सरल भाषा में जीवन के गूढ़तम प्रश्नों का समाधान इन सोरठो में मिलता है इसी कारण ये जन–जन का कंठाहार बन गये।

इन दोहो (सोरठो) का पहला संस्करण जोधपुर के गौड़ पूर्णचंद और थानवी सिवदान ने संवत् 1951 से प्रकाशित किया था। उसका नाम 'दुहा राजियै रा' था। इसमें 123 दोहे थे।"[1]

इस पुस्तक की भूमिका में सम्पादक ने लिखा है, "यह बात जगत प्रसिद्ध है कि राजिया के दोहे अति चमत्कारी और नीति से भरे हुए है, जिनके लिए लोग चातक चन्द्र की भांति उत्कंठित रहते थे और यह आशा बनी रहती थी किसी तरह राजिया के दोहे हाथ लग जाये। उनकी आशा पूर्ण करने के लिए हमारे मित्त थानवी शिवदानमल जी ने पूर्ण परिश्रम कर इनको एकत्रित करके छपवाकर प्रस्तुत किया।"[2] राजिया के दोहों के प्रति लोगों की उत्कण्ठा का कारण यही है कि इन्होंने आचार–विचार, लोक–व्यवहार, संत–असंत गुरू, माया, जीवन, जगत, मान, अपमान, गुण, दोष, स्वभाव, सज्जनता निर्धनता, प्रेम, कपट, चिन्ता, चापलूसी, त्याग तथा लघुता आदि विषयों पर अनूठें नीतिवचन कहे जो राजिया के सोरणे की प्रासंगिकता बढ़ाते है।

आज हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या भौतिकता की ओर अंधी दौड़ है। हमारी पुरानी परम्पराऐं भूलकर हम भौतिकता की चकाचौंध में फसते जा रहे है। लोभ–लालच के चक्कर में मनुष्य केवल यंत्रमात्र बन गया है संवेदनाऐं शुन्य हो रही है आज कहने को तो विश्व भले ही सिमटकर निकट हो रहा है किन्तु पड़ोसी अपने पड़ोसी से दूर हो रहा है। पारिवारिक मर्यादाऐं टूट रही है लोग मुंह पर वो मीठी बाते करते और ह्रदय से हानि करने की सोचते है ऐसे लोगों से दूर रहने की सलाह देते हुए कृपाराम जी ने लिखा हे।

"मुख ऊपर मीठास, घट माँही खोटा घडै,
इसडा सू इखळास, राखीजै नहि, राजिया।"

आधुनिक काल में लोग स्वार्थी हो गये है वे केवल अपने स्वार्थ के लिए ही किसी दूसरे से मीठा बोलते है जब स्वार्थ होता है तो लोग अच्छे पकवान भी खिलाते है और बिना स्वार्थ के तो आदर भाव भी नही करते अतः कृपाराम जी ने ऐसे लोगों को सम्बोधित करते हुए लिखा है–

मतलब री मनवार, चुपकै लावै चुरमो
बिन मतलब मनवार, राब न पावै राजिया।

आज समाज में ऐसे लोगों की कमी नही जो कपट करते है कृपाराम जी ने दुष्ट और नीच लोगों को बेकार बताते हुए सज्जन पुरूष का महत्व बताया है वे सोरठे के माध्यम से बताते हैं कि सज्जन चाहे रूष्ट हो चाहे तुष्ट, सदा उपकार ही करते है। वे किसी भी अवस्था में किसी का अपकार नहीं करते।

कुटळ निपट नाकार, नीच कपट छौड़े नहीं।
उत्तम करै उपगार, रूठा तूठा, राजिया।।

आज के भौतिक युग में लोग अपना नाम कमाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है, निम्न वर्ग को कुचलने का हरदम प्रयास करते हैं। अर्थ के लिए अपने सम्बन्धों को भी तार–तार करने में संकोच नही करते। अपने स्वार्थ में डुबकर दूसरों के अहित के लिए हर संभव प्रयास करते है। ऐसे समय में आज भी कृपाराम जी खिड़िया के सोरठे न केवल सीख देते है बल्कि सुमार्ग पर चलते हुए हाशिये के लोगों को महत्व देने को भी प्रेरणा देते है। मानवता का संदेश कृपाराम के हर सोरठे में दृष्टिगोचर है। सच्चे प्रेम और भाईचारा निभाने के लिए सिर देना भी उचित बताया है।

बरतै हेत सवाय, कर बंधू राखै कनै।
जो सिर दीजै जाय, रीठ बजाड़ै, राजिया।

उन्होंने अपने नाम और प्रसिद्धि को त्यागकर सेवक राजिया को सम्बोधित करके जो सोरठे लिखे है उनमें राजिया को तो प्रसिद्धि मिली ही है, साथ ही साथ कृपाराम जी के उद्वार हृदय का भी परिचय मिलता है।

रीतिकाल में दरबारी कवि केवल राजा का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन करते थे। अपनी कविताओं द्वारा आश्रयदाताओ की प्रशंसा करने में व्यस्त थे। झूठी चापलूसी कर कविता के मूल्यों को गिराते हुए केवल वीर और श्रृंगार के आवरण में अश्लील रचना करना एक परम्परा बन गयी थी। कृपाराम जी ने देवीसिंह के दरबारी कवि होते हुए भी नीतिपरक काव्य की रचना की जो उस समय की परम्परा से हटकर थी। आम नागरिक के लिए उनके सोरठे उस समय भी पथप्रदर्शक थे और आज भी है। राजिया के सोरठे के रचनाकार कृपाराम जी के एक–एक सोरठे का सम्बन्ध व्यावहारिक जीवन से घटने वाली घटनाओं से है ये कहीं मार्ग दिखाते हैं तो कहीं अनीति पर चलने वालों पर चुटीला व्यंग्य करते हैं। एक सोरठे में कवि ने श्वान प्रकृति एवं गजराज की मन–मरती स्वतन्त्र गतिमति का चित्रण ही नहीं किया गया है, उनके साथ अपने दम्भ एवं अहं की तुष्टि करने वाले उन लोगों पर करारा व्यंग्य भी किया है जो अर्थ में अनावश्यक रूप से परदोष दर्शन में लगे रहते हैं तथा भौंकते रहते हैं। इस सम्बन्ध में एक सोरठा प्रसिद्ध है–

गहभरियो गजराज, मदछकियो चालै मतै
कूकरिया बेकाज, रोय भुसै क्यो, राजिया

"बिसाऊ से निकलने वाली वरदा पत्रिका के सम्पादक उदयवीर सिंह शर्मा ने भी राजिया के सोरठे की सराहना करते हुए लिखा है"

राजिया के सोरठे के बल पर कविवर कृपाराम को राजस्थानी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। राजस्थानी भाषा की सरसता के साथ इनमें व्याप्त जादूभरा अर्थ चमत्कार विद्वानों को आकृष्ट करता रहा है। इनमें भाव सौंदर्य, व्यवहार ज्ञान तथा नीति कुशलता का सार दृष्टव्य है। इनका चुटीलापन एक प्रभाव छोड़ता है। मानव स्वभाव एवं समस्याओं का यथार्थ धरातल पर विचार करने में सफल हुए हैं। सुक्तियों व उक्तियों से मंडित ये सोरठे सभी पर अपनी छाप छोड़ते हैं।

कृपाराम जी के अनुसार साहसी व्यक्ति को ही समाज में महत्त्वशाली समझा जाता है। साहस रखने पर ही मनुष्य का मूल्य

बढ़ता है बिना साहस के उसका कोई मुल्य नहीं होता। बिना साहस से हीन पुरूष रद्दी कागज के समान होता है, जिसका कोई आदर नहीं करता आज की नई पीढ़ी को यह संदेश प्रेरणास्पद है।

"हिम्मत किम्मत होय, बिण हिम्मत किम्मत नहीं।
करै न आदर कोय, रद कागद, ज्यूँ राजिया।

संगति के असर को कृपाराम जी ने बड़ी सरल व सुबोध भाषा में समझाया है। बड़े लोग भी अगर नीच की संगति करेंगे तो असर पड़ेगा वह भी नीच कार्य करेगा जैसे–

"स्याळा संगत पाय, करक चंचेडे केहरी,
हाय कुसंगत! हाय!, रीस न आवै राजिया।"

अर्थात् गीदड़ों की संगति में पड़कर शेर भी उनकी देखा–देखी करने लग जाता है और सूखी हड्डियों चबाने लग जाता है। ऐसी कुसंगति को बार–बार धिक्कार है कि ऐसा करते हुए किसी को अपने ऊपर रोष नहीं आता। आज के संदर्भ में भ्रष्टाचार मिटाने की डींग हाकने वाले लोग भी छोटों को रिश्वत लेते देखकर उनके साथ मिल जाते हैं।

स्वतन्त्र भारत में आज चारों ओर फैले जातिगत वैमनस्य धार्मिक संकीर्णता, अनाचार–दुराचार, भेदभाव, भाषा प्राप्त एवं साम्प्रदायिकता, सामाजिक विषमता, धनलिप्सा, चारित्रिक पतन जैसी अनेक समस्याओं के कारण आज लोकतंत्र रूपी वृक्ष की जड़े कमजोर होती जा रही हैं। मानव मूल्यों का ह्रास दिन प्रतिदिन हो रहा है। शासक और प्रजा के बीच सम्बन्ध बिगड़ते जा रहे हैं। अराजकता के कारण प्रजा शासकों की बात नहीं मानती या ऐसे भी कह सकते हैं कि शासक वर्ग में अविश्वास होने के कारण प्रजा अराजक हो जाती है। इस बात को प्रमाणित करने वाला सोरठा इस प्रकार है–

"करै न संका कोय, गांव–धणी, संभड़ गिणै।
रैत बराबर होय, रोळ दट्ट में, राजिया।"

आज के युग में युवावर्ग केवल सुन्दरता और फैशन को अधिक महत्व देता है। वह किसी भी वस्तु का मूल्यांकन बाहरी सौंदर्य और चकाचौंध की दृष्टि से करता है। मनुष्य देखने में चाहे सुंदर हो, असुंदर पर गुणवान होना चाहिए। देखने में सुंदर किंतु गुणहीन पुरुष का कोई मूल्य नहीं होता। कृपाराम जी कस्तूरी और शक्कर का उदाहरण देकर बताया है कि कस्तुरी देखने में काली और कुरूप होती है, पर बहुमूल्य वस्तुओं की भांति कांटे पर छोटे बातों से तोली जाती है। दूसरी और चीनी देखने में सुहावनी होती है , पर साधारण मूल्य वाली वस्तुओं के बराबर पत्थरों से तोली जाती है। कृपाराम जी ने प्रमाणित किया है कि वस्तुओं का मूल्य उनके बाहरी रूप में नहीं होता आन्तरिक गुण में होता है।

"काली भोत करूप, कस्तुरी कांटै तुलै।
सक्कर बड़ी सरूप, रोड़ा तूलै, राजिया।"

इस प्रकार कृपाराम जी खिड़िया का नीतिकाव्य विविध संदर्भों में हमारे लिए आज प्रासंगिक है। उनके सोरठों से आज के समाज की समस्याओं का समाधान मिलता है। उनके सोरठे लोक जीवन से जुड़े हुए हैं। अपने अनुभव के आधार पर लिखे सोरठे विचार के सांचे में ढ़ालकर रचे हैं। इसलिए उनका प्रभाव और ज्यादा बढ़ गया है। उनके नीतिपरक सोरठे हमारे वर्तमान भ्रष्ट परिवेश में युगांतकारी परिवर्तन लाने में समर्थ है और प्रासंगिक भी है।

शोधार्थी, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सदर्भ सूची

1. शर्मा, उदयवीर : कृपाराम खिडिया, साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण ,1990 पृ.स. 29
2. स्वामी, नरोत्तमदास : राजिया रा दूहा, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।